गुरु अष्टकम्

Guru Ashtakam – संस्कृत, हिंदी अर्थ सहित

॥ अथ गुर्वष्टकम् ॥

शरीरं सुरूपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥१ ॥

अर्थ: शरीर सुंदर हो, पत्नी भी रूपवती हो, यश चारों ओर सुंदर ढंग से फैला हो और धन सुमेरु पर्वत जितना विशाल हो, पर यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो इन सबसे क्या लाभ? क्या लाभ? क्या लाभ?

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं
गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥२ ॥

अर्थ: पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, घर और भाई-बंधु, यह सब कुछ प्राप्त हो गया हो, फिर भी यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो इन सबका क्या अर्थ है?

षडङ्गादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥३ ॥

अर्थ: छह अंगों सहित वेद और सारे शास्त्रों का ज्ञान मुख पर हो, व्यक्ति कविता करने में निपुण हो और सुंदर गद्य-पद्य रचता हो, पर यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो उस विद्या का क्या लाभ?

विदेशेषु मान्यः स्वदेशेषु धन्यः
सदाचारवृत्तेषु मत्तो न चान्यः ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥४ ॥

अर्थ: विदेशों में मेरा सम्मान है, अपने देश में मैं धन्य माना जाता हूँ, सदाचार और अच्छे आचरण में मुझसे बढ़कर कोई नहीं, ऐसा कोई सोचे भी, पर यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो इस प्रतिष्ठा का क्या मूल्य?

chalisa-pdf.com

क्षमामण्डले भूपभूपालवृन्दैः
सदा सेवितं यस्य पादारविन्दम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥५॥

अर्थ: इस पृथ्वी पर बड़े-बड़े राजा और सम्राट जिसके चरणों की सदा सेवा करते हों, ऐसे व्यक्ति का भी यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो उस वैभव से क्या लाभ?

यशो मे गतं दिक्षु दानप्रतापा-
ज्जगद्वस्तु सर्वं करे यत्प्रसादात् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥६॥

अर्थ: दान और पराक्रम के कारण मेरा यश सभी दिशाओं में फैल गया है और अपने गुणों के प्रभाव से संसार की हर वस्तु मेरी मुट्ठी में है, फिर भी यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो यह सब व्यर्थ है।

न भोगे न योगे न वा वाजिराजौ
न कान्तामुखे नैव वित्तेषु चित्तम् ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥७॥

अर्थ: मन भोगों में न अटका हो, न योग-सिद्धियों में, न घोड़ों और वाहनों के वैभव में, न प्रियजन के मुख में और न ही धन में, ऐसी वैराग्य की अवस्था भी हो, पर यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो उसका क्या लाभ?

अरण्ये न वा स्वस्य गेहे न कार्ये
न देहे मनो वर्तते मे त्वनर्घ्ये ।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरङ्घ्रिपद्मे
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥८॥

अर्थ: मेरा मन न वन में रमता है, न अपने घर में, न किसी काम में, न इस शरीर में और न किसी अनमोल वस्तु में, ऐसी निर्लिप्तता भी हो, पर यदि मन गुरु के चरण-कमलों में नहीं लगा, तो उसका क्या अर्थ?

गुरोरष्टकं यः पठेत्पुण्यदेही
यतिर्भूपतिर्ब्रह्मचारी च गेही ।
लभेद्वाञ्छितार्थं पदं ब्रह्मसंज्ञं
गुरोरुक्तवाक्ये मनो यस्य लग्नम् ॥९॥

अर्थ: (फलश्रुति) जो पुण्यात्मा, चाहे वह संन्यासी हो, राजा हो, ब्रह्मचारी हो या गृहस्थ, इस गुरु अष्टक का पाठ करता है और जिसका मन गुरु के कहे वचनों में लगा रहता है, वह अपना मनचाहा लक्ष्य और ब्रह्म नाम का परम पद प्राप्त करता है।

॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं गुर्वष्टकं सम्पूर्णम् ॥

chalisa-pdf.com

Guru Ashtakam Lyrics in English

Shariram surupam tatha va kalatram
Yashash-charu chitram dhanam meru-tulyam
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||1||

Kalatram dhanam putra-pautradi sarvam
Griham bandhavah sarvam-etad-dhi jatam
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||2||

Shadangadi-vedo mukhe shastra-vidya
Kavitvadi gadyam supadyam karoti
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||3||

Videshesu manyah svadesheshu dhanyah
Sadachara-vritteshu matto na chanyah
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||4||

Kshama-mandale bhupa-bhupala-vrindaih
Sada sevitam yasya padaravindam
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||5||

Yasho me gatam dikshu dana-pratapa-
J-jagad-vastu sarvam kare yat-prasadat
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||6||

Na bhoge na yoge na va vaji-rajau
Na kanta-mukhe naiva vitteshu chittam
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||7||

Aranye na va svasya gehe na karye
Na dehe mano vartate me tv-anarghye
Manash-chen-na lagnam guror-anghri-padme
Tatah kim tatah kim tatah kim tatah kim ||8||

Guror-ashtakam yah pathet-punya-dehi
Yatir-bhupatir-brahmachari cha gehi

chalisa-pdf.com

Labhed-vanchhitartham padam brahma-sanjnam
Guror-ukta-vakye mano yasya lagnam ||9||

और भी चालीसा, आरती व स्तोत्र PDF के लिए देखें: www.chalisa-pdf.com

chalisa-pdf.com